



में तो गाव की लड़की “ममता” हु मुझे गाव में  
ही रहने दे!  
कलम मत दे, मेरे हाथो में झाड़ू ही रहने दे!  
सोचती हु अगर लड़का होती तो थोडा पढ़ लिख जाती  
लेकिन अब इस सोच को सोच ही रहने दे!  
में तो लड़की हु क्या करुगी पढ़ लिखकर  
मुझे इन चार दीवारों के बिच घुंघट में ही रहने दे!  
आती तो मुझे हजारो चीज़े है!  
पर इन चीजों को मेरे पास ही रहने दे!  
सुना था ख्वाहिशो के भी पर होते हे!  
पर अब इन ख्वाहिशो को ख्वाब में ही रहने दे  
में तो लड़की हु मुझे गाँव में ही रहने दे!